साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

न मेरे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त हो और न किसी का दुःख मैं लूं...

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि हम चतुर्भुज हैं, और जितनी बार ये स्वमान को हम अन्दर में याद भी करते हैं उतनी बार हम उस संस्कार को जागृत करते हैं। और इस तरह से बाबा ने जब कहा कि स्वमान की माला दी है तो इस तरह से रोज़ स्वमान लेकर उसके स्वरूप बनो। अब आगे पढ़ेंगे...

तो जो देहभान के संस्कार हैं उसको सहजता से समाप्त कर सकेंगे। इसलिए अशरीरी के पहले विदेही बनना बहुत आवश्यक है। जब तक विदेही नहीं बनेंगे, रहना देह में ही है, कर्म भी सबकुछ करना है, भौतिकता के बीच में रहना है लेकिन विदेही। देही अभिमानी और विदेही में ये अंतर है कि देही अभिमानी आत्मा के सात गुणों की ऊर्जा को कर्म में लाना और विदेही माना कोई न कोई श्रेष्ठ स्वमान की ऊर्जा को व्यावहारिक रूप में ले आना। और उस रीति से जीवनमुक्त स्थिति, किसी के भी ऊपर हम आधारित न हों। इसके बिना काम नहीं चलेगा, सबके बिना काम चल सकता है। आज वो व्यक्ति है, कल शरीर छूट गया तो! भावार्थ ये है कि बाबा हम बच्चों को सबसे न्यारा कर देता है और सबका प्यारा भी। तो जितना न्यारा रहेंगे उतना प्यारा।

दादी सुनाती थीं कि बाबा के पास जाते थे बातें सुनाने, जब बाबा को सुनाते थे अपनी बात तो लगता था कि बाबा सुन नहीं रहा है। फिर जब पूछते थे तो बाबा बता देते थे कि ये बात थी तुम्हारी। मतलब बाबा सारी बात सुनने के बाद भी डिटैच रहते। क्योंकि बाबा अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहते थे। बातों का प्रभाव उनके मन पर नहीं पड़ता था। और इसीलिए जीवनमुक्त स्थिति में रहे। तब जाकर डेड साइलेंस, यानी एक देह से डिटैच। अशरीरी। अशरीरी होकर परमधाम में साथ बैठकर वहाँ न कोई संकल्प-विकल्प चलते हैं, न कोई मन के अन्दर बात सूक्ष्म में भी स्थान रखती है। और बहुत सहज हम जैसे विकर्मों का विनाश करने का अनुभव करते हैं। ज्वाला जलती है और उस ज्वाला से आत्मा का शुद्धिकरण हो रहा है। उस बीज रूप बाबा से हम भी भरपूर हो रहे हैं। हमें भी ऐसी बाबा की सकाश प्राप्त हो रही है जिस सकाश से हम भरपूर हो रहे हैं अन्दर से। और भरपूर होकर सम्पन्न बनते जा रहे हैं, ये है अशरीरीपन की स्थिति।

बीज स्वरूप माना एक भरपूरता की अनुभूति। बीज के अन्दर जैसे सारा वृक्ष समाया हुआ है, इसी तरह हम आत्माएं भी भरपूरता की स्थिति में स्वयं को अनुभव करें। लेकिन शरीर के भान से एकदम न्यारे रहें। जैसे बाबा के लिए साकार में बताती हैं दादियां कि जब बाबा चलता था ना, या मम्मा भी जब चलती थी तो जैसे धरनी को भी तकलीफ नहीं होनी चाहिए, इतना दबे पाँव चलते थे। आज कई लोग चलते हैं तो धप-धप करके, आवाज़ करते चलते हैं। धरनी को कितना कष्ट देते हैं।

अब फरिश्ता अर्थात् लाइट। हर बात में लाइट रहो। अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें तो हर बात में बिंदी लगाना आना चाहिए। किसी ने कुछ कहा बिंदी लगाओ, न्यारे हो जाओ। अशरीरी हो जाओ। जो ब्राह्मणों के स्वभाव-संस्कार में ये बात थी कि उसने कुछ कहा फीलिंग आ गई, दुःख हो गया, वो बात अन्दर चलती रही, वो ब्राह्मणों का पार्ट अब पूरा हो गया यानी अब तक की जो हरकतें थी हमारी ये समाप्त हो गईं। अब परिपक्व स्थिति में आये। अब फरिश्ता स्वरूप लाइट। हर कर्म करो लेकिन लाइट। न मेरे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त हो और न किसी का दुःख मैं लूं। हल्के होकर हर कर्म करो यही फरिश्ता बनना है। अगर यहाँ फरिश्ता नहीं बने और वही ब्राह्मण में रहे, वो ब्राह्मण माना जो संघर्ष है, कहाँ न कहाँ अपने संस्कारों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। परिस्थितियों के साथ संघर्ष कर रहे हैं, व्यक्तियों के साथ संघर्ष हो रहा है। तो संघर्ष वाला कहाँ जायेगा? त्रेता में जायेगा ना! इसलिए ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो जो फरिश्ता बनेगा, वही देवता में जायेगा, सतयुग में जायेगा। अगर संघर्ष में रहे फरिश्ता नहीं बने तो सतयुग कैंसिल और सीधा त्रेता में। यानी दो करोड़ आत्मा के बाद हमारा नम्बर लगेगा। तो दो करोड़ के बाद, 1250साल के बाद मुझे नीचे उतरना होगा। कितने जन्म के बाद? 8 जन्म बाद होगा नीचे आना। मंजूर है?

देवबंद-शिव चौक(उ.प्र.)। 20 दिवसीय तिरपुर मां बाला सुंदरी देवी मेले में लगाई आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग प्रदर्शनी का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए कुंवर बृजेश सिंह,मंत्री पीडब्ल्यूडी,उ.प्र.। साथ हैं विजय त्यागी,प्रतिनिधि ब्लॉक प्रमुख, ब्र.कु. पिंकी,छुटमलपुर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र। राजयोगिनी ब्र.कु. रतनमोहिनी दादी के तेरहवीं पर आयोजित कार्यक्रम में आये विधायक पंकज पटेल को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

सूरतगढ़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए इनर विंग की अध्यक्षा श्रीमती संगम,सेक्रेटरी, श्रीमती परविंदर,कोषाध्यक्ष, श्रीमती सोनू,मात्र छाया क्लब की अध्यक्षा एवं वार्ड पार्षद श्रीमती संतोष गिरी, सांता किड्स स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती ज्योति मुंजल, ब्र.कु. रानी एवं ब्र.कु. पुष्पा।

कुराली-पंजाब। कुराली के गांव स्यालवा में 'जीवन जीने की कला' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में गांव वासियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्वराज बहन।

झुंझुनूं-राज.। मुकुंदगढ़ स्थित ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में सात दिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. साक्षी, ब्र.कु. किसन लाल, ब्र.कु. रामजी लाल, अध्यापक ग्यारसी लाल तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

1. इस वर्ष को निर्माण, ... वर्ष और व्यर्थ से मुक्त होने का मुक्ति वर्ष मनाओ।(3)
4. निर्माणता ऐसी चीज़ हैं, कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा ..... दिलाने के निमित्त बन जायेंगी।(4)
8. शिवबाबा जाने ओर ब्रह्मा बाबा जाने क्यों कि बापदादा को तरस बहुत पड़ता है लेकिन ऐसे बच्चे बापदादा के ..... के संकल्प को टच नहीं कर सकते, कैच नहीं कर सकते। (3)
9. कभी भी यह नहीं सोचना कि जो हम कर रहे हैं, जो हो रहा हैं वह बापदादा नहीं देखते हैं। इसमें कभी ..... नहीं होना।(4)
10. शरीर भी पवित्र, आत्मा भी पवित्र और प्रकृति भी पवित्र .....,, सुखदाई...निश्चय की कलम से अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हैं।(3)
11. बापदादा कई बार याद दिलाते हैं कि बाप आपके लिए सौगात लाये हैं तो सौगात क्या लाये हैं? सुनहरी दुनिया, ... दुनिया की सौगात लाये हैं।(5)
12. कई बच्चे ऐसे समझते हैं कि ..... में तो पता ही नहीं पड़ेगा कौन क्या था, अभी तो मौज मना लो। अभी जो कुछ करना है कर लो। कोई रोकने वाला नहीं, कोई देखने वाला नहीं। लेकिन यह गलत हैं।(4)
15. आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों के मस्तक में चमकती हुई तीन लकीरें देख रहे हैं। एक लकीर है प्रभु ..... की, दूसरी लकीर है श्रेष्ठ पढ़ाई की और तीसरी लकीर है श्रेष्ठ मत की। (3)
17. हीरे मोती मुख से निकलें। अभिमान से बोलने से किसको दुःख क्यों देते हो! दुःख के खाते में .....तो होगा ना। आप समझते हो क्या हुआ बोला दिया, ऐसे ही तो है। लेकिन दुःख के खाते में ..... होता है।(2)
20. दीपक, चिराग, दीवा।(2)

अव्यक्त मुरली 28-03-2002 (पहेली-18)2024 -25

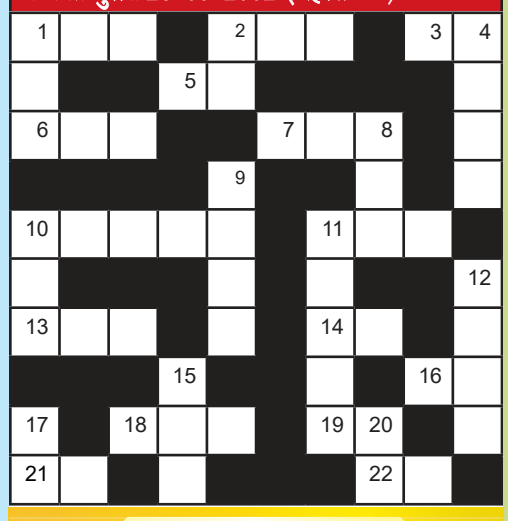

17/24- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 11-03-2002)

ऊपर से नीचेः 1.अभिमान, 2.माला, 3.सत, 4.साक्षात्कार, 8.केक , 10.तख्तनशीन, 11.विनाश, 12.महाराज, 13-.साकार, 14.टीचर, 19.दिन।

बायें से दायेंः 1.अपमान, 3.सम्पूर्ण, 5.गीत, 6.रक्षा, 7.मान, 9.पत्र, 10.तकदीर, 11.विचित्र, 12.महान, 13.सामना, 15.शक्ति, 16.नज़र, 17.घर, 18.जन्म, 19.दिल, 20.मधुबन, 21.दृढता।

बायें से दायें

1. बापदादा ने देखा है कि बोल-चाल में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सेवा में भी एक दो के साथ ..... स्वभाव विजय प्राप्त करा देता हैं।(3)
2. अभी 9 लाख भी नहीं हुए हैं। तो विश्व कल्याणी आत्मायें विश्व की सर्व आत्माओं का ..... कब करेंगे? (3)
3. श्रीमत पर चलना यह भी एक सब्जेक्ट हे। तो श्रीमत पर चलने की सब्जेक्ट में ..... हुए इसलिए फर्स्ट नम्बर वालों को बापदादा ने अपने तरफ से 25 मार्क्स बढ़ाई।(2)
5. अन्त में जब आप अपना पोतामेल ड्रामा अनुसार अपने ही ..... की टी.वी. में बापदादा दिखायेंगे, तो उसमें इस श्रीमत की मार्क्स कट नहीं करेंगे।(2)
6. बापदादा ने देखा है कि सेवा से ..... अच्छी हैं, चांस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हें।(3)
7. हे! रहमदिल, विश्व कल्याणी बच्चे, अपने दुःखी, अशान्त भाई-बहनों पर रहम नहीं आता? उमंग नहीं आता, दुःखमय ..... को सुखमय बना दें, यह उमंग नहीं आता?(3)
10. ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान के बच्चे हो, तो आपका तो एक-एक सेकण्ड का टाइम टेबुल फिक्स होना चाहिए। क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या? ब्रेक ..... नहीं हैं।(5)
11. माया अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे ..... पर ब्राह्मण बच्चों का अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में चाहिए। (3)
13. भाषण के समय आपके बोल, आपके मस्तक से, ... से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की अनुभूति अच्छी हो रही थी।(3)
14. .....पालना का भाग्य सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के और किसी को भी प्राप्त नहीं होता हैं।(2)
16. पवन अनिल(2)
18. आजकल का सब बातों में यह विशेष स्लोगन है-"सब ..... है"-यह अलबेलापन हैं।(3)
19. सरिता, तटिनी।(2)
21. बापदादा कहते है कि एक मास अपना एकाउन्ट अभी से रखो और अगर अभी भी एक मास एक्यूरेट, नम्बरवन वाला एकाउन्ट रखेंगे, तो बापदादा उसकी ..... कट नहीं करेंगे।।(2)
22. आज अमृतवेले से बच्चों के दो संकल्पों से ..... बापदादा के पास पहुँची।(2)